शिक्षण विधि

संस्कृत

शिक्षण-सूत्र

- Sk Katariya

Sky Educare

www.skyeducare.com

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सूत्राणि
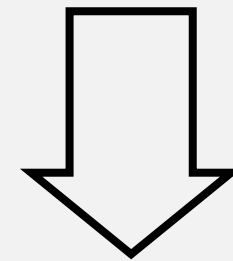
- ✓ शिक्षण में कठिनाइयों का समाधान करने के लिए मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने अपने अनुभवों व विचारों को सूत्र रूप में प्रस्तुत किया है जिन्हें **शिक्षण के सूत्र** कहा जाता है । जिससे **शिक्षण अधिगम** की प्रक्रिया सुगम, रुचिकर, प्रभावशाली व वैज्ञानिक बन जाती है। ये सूत्र **'बाल प्रकृति'** पर आधारित हैं।
- ✓ अतः प्रत्येक अध्यापक को शिक्षण कला में सफलता व दक्षता प्राप्त करने के लिए अपने विषयज्ञान के साथ-साथ शिक्षण सूत्रों का ज्ञान होना भी आवश्यक है ताकि शिक्षण को से सफल बनाया जा सकें ।

- Sk Katariya

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सूत्राणि-

- ✓ ज्ञातात् अज्ञातं प्रति ।
- ✓ सरलात् कठिनं प्रति ।
- ✓ स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति ।
- ✓ पूर्णात् अंशं प्रति ।
- ✓ अनुभवात् तर्कं प्रति ।
- ✓ विशेषात् सामान्यं प्रति ।
- ✓ विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति ।
- ✓ अनिश्चतात् निश्चितं प्रति ।
- ✓ आगमनात् निगमनं प्रति ।

- **ज्ञातात् अज्ञातं प्रति**
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

इस सूत्र के अनुसार शिक्षक को बालकों के (ज्ञात)**पूर्व ज्ञान को जाँचकर** उसी के आधार पर उन्हें **नया ज्ञान** (अज्ञात)देना चाहिए।

शिक्षक को पढ़ाने से पूर्व छात्रों का पूर्वज्ञान अवश्य जान लेना चाहिए और उसी को आधार बनाकर नवीन ज्ञान की तरफ बढ़ना चाहिए, क्योंकि नवीन तथ्य बच्चे के लिए कठिन होते हैं। किसी पाठ में छात्रों की रुचि व ध्यान तभी संभव है जब उसमें जानकारी व नयापन दोनों सम्मिलित हों।

उदाहरणार्थ- भाषा शिक्षण में वर्णमाला की जानकारी कराते समय प्रत्येक वर्ण से सम्बन्धित वस्तु की जानकारी करायें तत्पश्चात् उसी वर्ण से सम्बन्धित एक से अधिक वस्तुओं की जानकारी कराई जा सकती है। **जैसे- क से कमल, कलम, कलश, कबूतर तथा ख से खरगोश, खत, खड़ाऊं आदि।**

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- इस सूत्र का तात्पर्य यह है कि छात्रों को पहले सरल व फिर जटिल बातों की जानकारी दी जाये जिससे पाठ व विषय में उनकी रुचि व ध्यान लगा रहे।
- यह क्रम बाल विकास के अनुकूल व मनोवैज्ञानिक है क्योंकि बच्चा आयु बढ़ने व मानसिक विकास के साथ जटिल बातों को भी समझने लगता है। यदि अध्यापक प्रारम्भ में ही कठिन बातों/तथ्यों को छात्रों को बताने लगें तो वे उसे समझने में असमर्थ रहेंगे। इससे शिक्षक का प्रयास व्यर्थ हो जायेगा।
- उदाहरणार्थ- संधि के बाद समास आदि।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- **स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति**
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- संस्कृत शिक्षण के समय स्थूल पदार्थ दिखाकर क्रमशः उनका नाम, स्वरूप, स्वभाव आदि का वर्णन करना चाहिए।
- से शिक्षण में दृश्य श्रव्य साधन का प्रयोग करते हुए नियम क्लिष्ट भाव तथा सूक्ष्म भाव स्पष्ट करना उदाहरण से नियम की ओर प्रक्रिया चलती है।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- **पूर्णात् अंशं प्रति**
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- बालक के सामने कोई वस्तु आने पर वह सर्वप्रथम पूर्ण वस्तु को ही देखता, जानता व समझता है उसके विभिन्न अंगों/अंशों को नहीं।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- जैसे - संस्कृत शिक्षण में पहले संपूर्ण माहेश्वर-सूत्र सिखा कर बाद में प्रत्येक सूत्र का ज्ञान करवाया जाता है।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- **अनुभवात् तर्कं प्रति**
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- अनुभूत ज्ञान वह होता है जिसे बालक देखकर व अनुभव द्वारा प्राप्त करता है। अल्पायु के बालकों में तर्क व विचार के प्रयोग की क्षमता बड़ों की अपेक्षा कम होती है। उनकी जानकारियों का आधार उनका अपना अवलोकन व स्वानुभव होता है परन्तु इन अनुभवों के कारणों को खोजने में बाल मस्तिष्क असफल रहता है।

- अतः शिक्षक को बच्चों के अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान को विविध विधियों/सामग्रियों के प्रयोग द्वारा तर्क संगत व युक्तियुक्त बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- **विशेषात् सामान्यं प्रति**
- विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- एक अच्छा शिक्षक अपने शिक्षण का आरंभ 'आगमन' से करता है 'निगमन' पर समाप्त करता है इस सूत्र के अनुसार पहले उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं तत्पश्चात सामान्य नियमों की स्थापना की जाती है।
- व्याकरण शिक्षण में इसका अधिक महत्व है।
- संस्कृत/हिन्दी में सूक्ति एक विशिष्ट विचार से सम्बन्धित होती है परतु उसकी व्याख्या सामान्य सन्दर्भों में की जाती है।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- **विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति**
- अनिश्चतात् निश्चितं प्रति
- आगमनात् निगमनं प्रति

- विश्लेषण बालक को किसी बात को भली प्रकार समझने में सहायक होता है तो संश्लेषण उस बात के ज्ञान को निश्चित रूप प्रदान करता है।
- इस सूत्र के अनुसार किसी घटना या तथ्य की जानकारी पहले समग्र रूप में कराकर फिर उसके विविध भागों को व्याख्या व विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए तत्पश्चात उन भागों या खण्डों को आपस में जोड़कर पूरी जानकारी कराकर निष्कर्ष तक पहुंचना चाहिए।
- शिक्षण में विश्लेषण व संश्लेषण दोनों आवश्यक हैं।

- ज्ञातात् अज्ञातं प्रति
- सरलात् कठिनं प्रति
- स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति
- पूर्णात् अंशं प्रति
- अनुभवात् तर्कं प्रति
- विशेषात् सामान्यं प्रति
- विशेषणात् संश्लेषणं प्रति
- **अनिश्चतात् निश्चितं प्रति**
- आगमनात् निगमनं प्रति

- प्रारम्भ में बच्चों को किसी घटना, तथ्य, वस्तु का स्पष्ट व निश्चित ज्ञान नहीं होता है। अनुभव, परिपक्वता के अभाव व कल्पना की अधिकता के कारण वह उनके बारे में अपने मन में कुछ विचार बना लेते हैं जो अस्पष्ट, अनिश्चित व कई बार गलत भी होते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह उनके अनिश्चित ज्ञान को स्पष्ट व निश्चित करे तथा गलत धारणाओं/जानकारियों में भी सुधार करें।
- **उदाहरणार्थ-** किसी प्रदेश की प्रमुख स्थल व वहां की विशिष्टताओं से सम्बन्धित छात्रों के अस्पष्ट व अनिश्चित ज्ञान को शिक्षक वहाँ के मानचित्र, चित्र, मॉडल, चार्ट व उदाहरणों के माध्यम से निश्चित व स्पष्ट कर सकता है।

- *ज्ञातात् अज्ञातं प्रति*
- *सरलात् कठिनं प्रति*
- *स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति*
- *पूर्णात् अंशं प्रति*
- *अनुभवात् तर्कं प्रति*
- *विशेषात् सामान्यं प्रति*
- *विशेषणात् संश्लेषणं प्रति*
- *अनिश्चतात् निश्चितं प्रति*
- ***आगमनात् निगमनं प्रति***

- *आगमन विधि उदाहरण से नियम की ओर प्रयोग होती है तथा निगमन विधि नियम से उदाहरण के उपयोग होती है।*
- *आगमन विधि वैज्ञानिक निरीक्षण की विधि है जो अंततः किसी निगमन पर पहुंचती है उसे प्रमाणित करती है।*
- *विद्यार्थियों द्वारा ही तथ्यों और नियमों की खोज करना इस सूत्र का मूल है।*
- *व्याकरण शिक्षण हेतु उदाहरण से नियम की ओर जाना अर्थात् आगमन विधि को ही उपयुक्त माना जाता है।*
- *व्याकरण शिक्षण की प्राचीन विधि नियम से उदाहरण की ओर जाना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं मानी जाती।*